अपराजिता : वर्ष 53 अंक 01: 2025
स्थापना वर्ष : 1972 (प्रिंट), 2025 (ऑनलाइन)

भारत के उत्कर्ष में बाबा साहब के विचारों की प्रासंगिकता

प्रो रमेश कुमार
प्रोफ़ेसर एवम् अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास

डॉ. बाबा साहब भीम राव अम्बेडकर बहुआयामी प्रतिभा सम्पन्न् एवं आधुनिक भारत के स्वप्न द्रष्टा थे। वे शिक्षक, वकील, मंत्री, दार्शनिक, राजनेता, समाज सुधारक थे। प्रत्येक व्यक्ति का चिंतन देश-काल सापेक्ष होता है। बाबा साहब का जन्म ऐसे परिवेश में हुआ था जहाँ समाज में वर्ण-व्यवस्था, जाति, अस्पृश्यता का बोल-बाला था। दलित एवं महिलाओं को उनके अधिकारों से वंचित कर उनका शोषण किया जाता था ये सब उनकी आँखों के सामने हुआ जिसकी पीड़ा का अनुभव उन्होंने स्वयं किया। ये अनुभव उन्हें मर्माहत कर दिए और उनके मन को भीतर से झकझोर दिए। सामाजिक एवं आर्थिक असमानता को उन्होंने नजदीक से देखा। यहीं से इनका दृष्टिकोण पूरी तरह से उदारवादी हो गया और ये आजीवन मानवता के लिए संघर्ष करते रहे। वे एक ऐसे समाज की परिकल्पना कर रहे थे जिसका आधार स्वतंत्रता, समानता एवं भाईचारा हो। जहां कोई वर्ण-जाति का भेद न हो, छुआछूत, ऊँच-नीच का भेदभाव न हो। स्वतंत्रता, समानता, भाईचारा इन तीन तत्त्वों को केन्द्र में रखकर उन्होंने अपनी क्रांतिकारी विचारों की नींव रखी। इनके चिंतन की जड़े धर्म में थी, राजनीति में नही। धर्म की प्रेरणा-स्रोत बौद्ध-दर्शन था। बौद्ध दर्शन पूरी तरह मानवतावादी मूल्यों का समर्थन करता है।

दलितों के उत्थान के लिए वे निरंतर प्रयत्नशील रहे। परम्परागत मान्यताओं में जकड़े होने के कारण दलित अन्याय एवं अत्याचार झेलते रहे। उनमें आत्मसम्मान की भावना गायब हो गई थी। बाबा साहब ने स्वयं इन पीड़ाओं को झेला था। वे दु:ख की गहराई को समझते थे। उन्होंने दलितों के स्वाभिमान को जगाया। उन्होंने कहा अन्याय को सहना भी पाप है। दलितों को सामाजिक न्याय दिलाने के लिए स्वयं को प्रयत्न किए ही साथ में उन्हें अपने कर्मचारियों को दूर करने के लिए प्रेरित किया। अन्याय के खिलाफ स्वयं को संघर्ष करना होगा कोई दूसरा हमें अन्याय से मुक्ति दिलाने नहीं आएगा। हम अन्याय एवं अत्याचार से तब तक मुक्त नहीं होंगे जब तक स्वयं सक्रिय नहीं होंगे। अपने अधिकारों के लिए खुद आगे आना होगा। श्रीमद्भगवतगीता में वर्ण-व्यवस्था की बात की गई है उसे खारिज करते हुए वे कहते हैं-जन्म के समय मनुष्य में जिस गुण की प्रधानता होती है उसकी प्रधानता मृत्यु तक बनी रहेगा यह कैसे संभव है? जब परिवर्तन सृष्टि का नियम है तो मानव में एक ही गुण स्थिर कैसे रहेंगे। दूसरी बात यह है कि यदि मनुष्य को परखने का आधार गुण है तो फिर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र जैसे नाम करण की क्या आवश्यकता है?

1-बाबा साहब दलितों के जाति उन्मूलन पर बल दिया। उन्होंने कहा यदि दास के मन में दासता के प्रति घृणा उत्पन्न् ा नहीं होती है तो उसे दूसरा कोई मुक्ति कैसे दिलाएगा? हमें समय रहते चेतना होगा और सुदृढ़ छांव तलाशनी होगी।

2-अंतर्जातीय विवाह पर भी बल दिया।

3-शिक्षा के द्वारा दलितों के जीवन स्तर में सुधार की बात कहा।

4-आर्थिक प्रगति के लिए उन्होंने कहा कि-दलितों को परम्परागत व्यवसाय को छोड़कर नए व्यवसाय अपनाने चाहिए।

दलितों के मसीहा ने बाबा साहब ने उनकी मुक्ति के विषय में बहुत ईमानदारी एवं तर्कसम्मत ढंग से

सोचा और अपनी सोच को व्यावहारिक जीवन में उतारने का भरपूर प्रयास भी किया। बाबा साहब का पिछड़े समाज को अपने साथ लेकर उनके अधिकारों की लड़ाई लड़ते हुए भारत का संविधान लिखा।

उनका उद्देश्य समता मूलक समाज की स्थापना करना था समता मूलक समाज का अभिप्राय एक ऐसे समाज से है जहाँ जाति, वर्ण का कोई भेद न हो, ऊँच-नीच, छूत-अछूत का भेद न हो। ये सारे विभाजन आज भी समाज कैंसर की तरह व्याप्त है। इस बीमारी से मुक्त होने के लिए बाबा साहब के आदर्शों को पुनर्जीवित करना होगा इस कार्य का दायित्व हम भारतीयों पर है।

भारतीय समाज में दो कमियों की तरफ ध्यान आकृष्ट करते हुए उन्होंने बताया कि- पहली कमी परस्पर समानता का अभाव है। यदि समाज में पूंजीपति और निर्धन का वर्चस्व रहेगा तो समानता की बात अर्थहीन है बिना समानता के विकास संभव नहीं होगा। दूसरी कमी- भाई चारा का अभाव है, समाज में भ्रातृत्त्व की भावना होनी चाहिए।

इन दोनों कमियों के रहते हुए वसुधैव कुटुम्बकम की स्थापना नहीं हो सकती हैं संपूर्ण सृष्टि हमारा परिवार है। सभी की शिक्षा, आर्थिक-विकास, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का विकास करते हुए राष्ट्रीय एकता एवं प्रगति की ओर अग्रसर होना चाहिए।

बाबा साहब महिला उत्थान की दिशा में अत्यधिक प्रयत्नशील रहे। भारतीय समाज में स्त्रियों की दशा चिंतनीय थी चाहे जिस वर्ग की महिला हो जैसे दलित, निर्धन, आदिवासी सभी वर्ग की महिलाओं का शोषण-होता था। समाज एवं शासन स्तर पर भी उनका उत्पीड़न होता था। यहाँ तक की पितृसत्तात्मक परिवार की वजह से महिलाओं की उपेक्षा होती थी। उन्हें दोयम दर्जे का नागरिक माना जाता था। अपने परिवार में ही उन्हें वह सम्मान नहीं मिलता था। आश्चर्य की बात आज आजादी के लगभग छः दशक बीत जाने के बाद भी उन्हें अपना सम्मान नहीं मिला।

बाबा साहब स्त्री-पुरुष समानता के घोर पक्षधर थे। अनुच्छेद 39घ में स्त्री-पुरुष को समान कार्य के लिए समान परिश्रमिक देने का प्राविधान है। इसी प्रकार अनुच्छेद 41 में राज्य को निर्देश दिया गया है कि बीमार एवं विकलांग महिलाओं की मदद की जाये। अनुच्छेद 39ड़ में महिलाओं की शक्ति एवं स्वास्थ्य के दुरूपयोग न करने का उल्लेख हुआ है। अनुच्छेद 45 में 14 वर्ष की बालिकाओं की मुफ्त शिक्षा का उल्लेख हुआ है। जिससे शिक्षा के माध्यम से उनमें जागरूकता लाया जा सके। महिलाओं की दुर्दशा का कारण बहुत हद तक शिक्षा भी है।

बाबा साहब ने महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार एवं निर्णय लेने की खूब वकालत की है। पिता एवं पति की सम्पत्ति पर अधिकार की बात की है। दलित वर्ग की महिलाओं को सामाजिक एवं राजनैतिक आंदोलन के लिए प्रेरित भी किया।

वे धर्म के क्षेत्र में क्रांति लाना चाहते थे। बाबा साहब का मानना है कि समानता एवं भाईचारा धार्मिक मान्यताओं से अधिक महत्त्वपूर्ण है। इन्होंने धर्म की नई परिभाषा गढ़ी। नैतिकता को धर्म के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। इसके लिए नैतिक नियमों का पालन करना चाहिए। सत्य, प्रेम, क्षमा, न्याय, दया, करुणा, क्षमाशीला को अपनाने से मानव सुखी रहेगा। मानव कल्याण के लिए परिश्रम एवं दृढ़ निश्चय का मार्ग अपनाना चाहिए। मनुष्य अपना उद्धारकर्त्ता स्वयं है। मेरे दुःख की निवृत्त की जिम्मेदारी दूसरा कोई कैसे लेगा? ऐसा धर्म जो मनुष्य की स्वतंत्रता का हनन कर दे वह कल्याणकारी धर्म कैसे होगा? धर्म का सम्बन्ध परलोक से न होकर मानव हितों की रक्षा होना चाहिए।

इस नई क्रांतिकारी सोच के लिए भारतीय समाज आज भी बाबा साहब का ऋणी रहेगा। दूसरी बात जो बाबा साहब ने धर्म के सम्बन्ध में बतायी वह यह है कि धर्म को बौद्धिक तत्त्वों पर आधारित होना चाहिए। इससे धर्म में अंधविश्वास को घुसने का मौका नहीं मिलेगा। धर्म को धारण करके हम मानव

बनते हैं। हमें धर्म का अंधानुकरण न करके विवेक से धर्म अपनाना चाहिए। बाबा साहब-सिख, ईसाई, इस्लाम से प्रभावित थे किन्तु अपने निर्णय के दो वर्ष पूर्व, दो लाख अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिए। बौद्ध धर्म की मैत्री, करुणा, सरलता, सहजता उन्हें भा गई। यह धर्म वाह्याडम्बरों से दूर मानव केन्द्र में था। जहाँ किसी आत्मा-परमात्मा, स्वर्ग-नरक, वर्ण, जाति की बात नहीं थी। यह धर्म सबके लिए था। 14 अक्टूबर 1556 को बाबा साहब ने स्वयं कहा-''मैं परम्परागत धर्म को त्याग कर नया जन्म ले रहा हूँ।''

अंत में मैं यही कहूँगा कि बाबा साहब ने अपना सारा जीवन सामाजिक सुधारों, दुखियों को दु:ख से मुक्ति, भयभीत मानव को भय से मुक्ति दिलाने का प्रयास करते रहे। महिलाओं के उत्थान के लिए जो प्रयास उन्होंने किया वह अविस्मरणीय है। मानव अपना उद्धारकर्त्ता स्वयं है-यह कहकर बाबा साहब आज अमर हो गए।

संदर्भ:

अम्बेडकर, बी0आर0: लाइफ एण्ड मिशन, पृ. 301

लाल, ए.: बाबा साहब अम्बेडकर जीवन और दर्शन, पृ. 28

डॉ. अम्बेडकर: राइटिग्स एण्ड स्पीजेंच, पृ. 312

त्रिपाठी, एस0एन0: बी0आर0 अम्बेडकर, पृ. 24

* * *